# उसने हमें भविष्यवक्ता दिए

अध्याय 6

## भविष्यवाणी का साहित्यिक विश्लेषण

Manuscript

thirdmill

Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

## थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

**संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।**

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

# विषय-वस्तु


परिचय..... 1
ऐतिहासिक वर्णन ..... 1
**वर्णनों के प्रकार** ..... 2
जीवनकथा..... 2
आत्मकथा ..... 2
**ऐतिहासिक वर्णनों की विषय-वस्तु**..... 3
भविष्यवाणिय बुलाहट..... 3
प्रतीकात्मक कार्य..... 3
दर्शन के वर्णन ..... 3
ऐतिहासिक पृष्ठभूमियां..... 4
परमेश्वर के साथ वार्तालाप ..... 5
**विलाप की प्रार्थनाएं**..... 5
लोगों के पाप..... 6
दण्ड..... 7
**स्तुति की प्रार्थनाएं**..... 7
दण्ड..... 8
आशीषें..... 8
लोगों के साथ वार्तालाप..... 9
**दण्ड के कथन**..... 10
दण्ड के वचन ..... 10
हाय के वचन ..... 11
मुकदमें..... 11
**आशीष के कथन**..... 12
शत्रुओं पर दण्ड..... 12
आशीष के वचन..... 13
**मिश्रित कथन**..... 14
दण्ड-उद्धार के वचन ..... 14
पश्चाताप की बुलाहट..... 14
युद्ध की बुलाहट ..... 14
भविष्यवाणिय विवाद ..... 14
दृष्टांत ..... 14





चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

उपसंहार........................................................................................... 15

# उसने हमें भविष्यवक्ता दिए

अध्याय छः

भविष्यवाणी का साहित्यिक विश्लेषण

## परिचय

मेरे बहुत से मित्र हैं जिन्होंने एक वर्ष में पूरी बाइबल पढ़ने का निर्णय लिया है। परन्तु बहुत बार मेरे ये मित्र मेरे पास आकर मुझसे कहते हैं: "रिचर्ड, जब मैं पुराने नियम की भविष्यवाणी को पढ़ना शुरू करता हूँ, तो मुझे लगता है जैसे कि मैं एक बहुत बड़े जंगल में खो गया हूँ।" हम में से अनेकों के साथ ऐसा ही होता है। हम सोचने लग जाते हैं कि हम भविष्यवक्ताओं के बारे में जानते हैं, परन्तु शीघ्र ही हम पाते हैं कि हम बिना किसी लक्ष्य के भटक रहे हैं क्योंकि हम पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के विषय में बहुत अनजान हैं।

इस अध्याय में हम बाइबल के इस भाग के विषय की जानकारी पाने का आरंभ करने जा रहे हैं। अतः हमने इस आध्याय का शीर्षक दिया है, "भविष्यवक्ताओं का साहित्यिक विश्लेषण"। इस अध्याय में हम तीन भिन्न-भिन्न प्रकार के साहित्यों पर ध्यान देंगे जो कि पुराने नियम की संपूर्ण भविष्यवाणी में पाए जाते हैं: ऐतिहासिक वर्णन- वे कहानियां जो उन घटनाओं को बताती हैं जो भविष्यवक्ताओं के जीवनों में घटी थीं; दूसरा, परमेश्वर के साथ वार्तालाप- वे अनुच्छेद जो परमेश्वर को संबोधित करते हुए भविष्यवक्ताओं की प्रार्थनाओं और प्रशंसा को बताते हैं; तीसरा, लोगों के साथ वार्तालाप, वे बातें जो भविष्यवक्ताओं ने दूसरे लोगों से कही थीं। इस बात को समझना कि किस प्रकार ये भिन्न भिन्न साहित्य भविष्यवाणिय पुस्तकों में मिलते हैं, हमें एक मानचित्र प्रदान करते हैं जो हमें उन खजानों की ओर लेकर जाएगा जो बाइबल के इस भाग में हमारा इंतजार करते हैं।

## ऐतिहासिक वर्णन

प्रत्येक जन को अच्छी कहानी पसंद है। इसीलिए हम पुस्तकें पढ़ते हैं और फिल्में देखने जाते हैं। यह इसलिए है क्योंकि कहानियां हमें केवल सूचनाएं ही नहीं देतीं, बल्कि उससे अधिक कार्य करती हैं। वे हमारी कल्पनाओं को भी जगाती हैं और हमें इस तरह से बदलती हैं जो कभी-कभी अकल्पनीय होता है। जब हम बाइबल के बारे में सोचते हैं, हम जानते हैं कि बाइबल में बहुत सी कहानियां या वर्णन हैं, परन्तु सामान्यतः हम उत्पत्ति, निर्गमन और गिनती को ही ऐतिहासिक वर्णन मानते हैं। परन्तु हमें यह भी देखना आवश्यक है कि पुराने नियम की भविष्यवाणीय पुस्तकों में भी बहुत से ऐतिहासिक वर्णन हैं।

ऐतिहासिक वर्णन पुराने नियम की अनेक भविष्यवाणीय पुस्तकों में अधिकता से पाए जाते हैं। सूची में सबसे ऊपर है योना। शुरू से लेकर अंत तक यह योना की कहानी और निनवे नगर में उसकी सेवकाई के बारे में बताता है। दानिय्येल की पुस्तक का एक बड़ा भाग भी ऐतिहासिक वर्णन हैं। दानिय्येल के दर्शन और उसकी भविष्यवाणियां भी ऐतिहासिक घटनाओं के संदर्भ में रखी गई हैं। इससे बढ़कर, यिर्मयाह और यहेजकेल जैसी पुस्तकों के कई अध्याय भी ऐतिहासिक वर्णनों को दर्शाते हैं। कुछ कम मात्रा में ऐसे वर्णन होशे, आमोस, और यशायाह जैसी पुस्तकों में कहीं कहीं पाए जाते हैं। जब हम पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं का अध्ययन करते हैं, तो हमें सदैव ऐतिहासिक वर्णनों की खोज में रहना चाहिए। वे अनेक पुस्तकों के महत्वपूर्ण भागों की रचना करते हैं।



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

हम दो विषयों पर केन्द्रित होने के द्वारा भविष्यवाणी में ऐतिहासिक वर्णन की भूमिका की जांच करेंगे: पहला, वर्णनों के प्रकार जो हम पाते हैं; और दूसरा, इन वर्णनों की विषय-वस्तु। आइए पहले हम वर्णनों के उन प्रकारों पर ध्यान दें जो हम भविष्यवाणिय पुस्तकों में पाते हैं।

## वर्णनों के प्रकार

पुराने नियम की भविष्यवाणियों में दो मूलभूत प्रकार के वर्णन पाए जाते हैं: जीवनकथा और आत्मजीवनकथा। जिस प्रकार ये दोनों शब्द दर्शाते हैं, जीवनकथाएं किसी तीसरे व्यक्ति के दृष्टिकोण का लेखा-जोखा होता है और आत्मकथाएं पहले व्यक्ति के दृष्टिकोण से बताई जाती हैं।

### जीवनकथा

कुछ विषयों में जीवनकथारूपी और आत्मकथारूपी वर्णन एक ही पुस्तक में प्रकट होते हैं। उदाहरण के तौर पर दानिय्येल की पुस्तक के पहले छः अध्याय दानिय्येल के जीवन की कई घटनाओं को तीसरे व्यक्ति के जीवनकथात्मक दृष्टिकोण से दर्शाते हैं। अध्याय 1 में हम बेबीलोन में दानिय्येल के प्रशिक्षण के बारे में पढ़ते हैं। अध्याय 2 में हम एक बड़ी मूर्ति के विषय में नबूकदनेस्सर के स्वप्न और दानिय्येल द्वारा उस स्वप्न के अर्थ बताने के बारे में पढ़ते हैं। अध्याय 3 उस प्रसिद्ध आग की भट्टी की कहानी है, और अध्याय 4 एक वृक्ष के बारे में नबूकदनेस्सर के स्वप्न और दानिय्येल द्वारा बताए गए अर्थ को बताता है। और फिर अध्याय 5 उस जाने माने समय के बारे में बताता है जब बेलशस्सर ने दीवार पर हाथ की लिखावट को देखा था, और अध्याय 6 शेर की गुफा में दानिय्येल के वर्णन को बताता है। ये सभी अध्याय जीवनकथा का आकार लेते हैं। वे पुराने नियम के भविष्यवक्ता दानिय्येल के बारे में तीसरे व्यक्ति के लेखनों की रचना करते हैं।

### आत्मकथा

यद्यपि दानिय्येल की पुस्तक के पहले छः अध्याय जीवनकथात्मक हैं, परन्तु अध्याय 7-12 आत्मकथा की ओर मुड़ जाते हैं। हर भाग का आरंभ छोटे परिचयों से होता है, परन्तु यह पहले व्यक्ति के वर्णनों से भरा हुआ है। दानिय्येल अपने शब्दों में स्वयं बताता है कि उसके साथ क्या होता है। अध्याय 7 चार पशुओं के स्वप्न के बारे में दानिय्येल के अपने वर्णन को बताता है। अध्याय 8 में दानिय्येल मेमने और बकरे के बारे में अपने दर्शन के विषय में बताता है। अध्याय 9 बंधुआई में गए लोगों के वापिस अपनी भूमि पर लौटने की दानिय्येल की प्रार्थना के आत्मकथा रूपी वर्णन को दर्शाता है। और अध्याय 10-12 परमेश्वर के लोगों के भविष्य के बारे में दानिय्येल के दर्शन के आत्मकथात्मक वर्णन को बताता है।

जब हम पुराने नियम की भविष्यवाणी का अध्ययन करते हैं तो हम कई जीवनकथाओं और कई आत्मकथाओं को पाएंगे, और जब हम इन शैलियों को देखें तो हमें उनके बारे में जानना आवश्यक है। पुराने नियम के लेखकों ने ऐतिहासिक वर्णन के रूप में लिखा ताकि वे अपने अध्यायों को अप्रत्यक्ष रूप से हमें सीखा सकें, और यदि हम इन शैलियों को नहीं देखते तो हम उन महत्वपूर्ण संदेशों को नहीं देख पाएंगे जो वे हमें देते हैं।

यह देखकर कि ऐतिहासिक वर्णन भविष्यवाणिय पुस्तकों में प्रभावशाली रूप में पाया जाता है, अब हम इस स्थिति में हैं कि एक और प्रश्न पूछें: इन वर्णनों की मूल विषय-वस्तु क्या थी?



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

# ऐतिहासिक वर्णनों की विषय-वस्तु

भविष्यवक्ताओं की सारी पुस्तकों में हम पाते हैं कि ऐतिहासिक वर्णन चार मुख्य निर्देशों पर ध्यान देते हैं: पहला, भविष्यवाणिय बुलाहट; दूसरा, प्रतीकात्मक कार्य; तीसरा, दर्शन के वर्णन; और चौथा, ऐतिहासिक पृष्ठभूमियां।

## भविष्यवाणिय बुलाहट

भविष्यवाणिय बुलाहट उन समयों का वर्णन है जब परमेश्वर ने भविष्यवक्ताओं को उसके बारे में बात करने की आज्ञा दी थी। इस प्रकार के वर्णन अनेक मुख्य अनुच्छेदों में पाए जाते हैं। उदाहरण के तौर पर, यशायाह अध्याय 6 परमेश्वर द्वारा यशायाह को बुलाहट देने का वर्णन करता है। यिर्मयाह अध्याय 1 बताता है कि किस प्रकार परमेश्वर ने अपनी वाचा का प्रतिनिधित्व करने के लिए यिर्मयाह को बुलाया। और उसी प्रकार यहेजकेल अध्याय 2 में हम पाते हैं कि परमेश्वर ने यहेजकेल को एक बहुत ही विशेष रूप में अपनी सेवा करने के लिए बुलाया। इन सारे अनुच्छेदों में हम कहानियों या ऐतिहासिक वर्णनों को पाते हैं, और हम परमेश्वर के समक्ष भविष्यवक्ता की विनम्रता को पाते हैं और यह भी कि किस प्रकार भविष्यवक्ता आश्वस्त थे कि परमेश्वर ने उनकी सेवाओं को अधिकार दिया है।

भविष्यवक्ता की बुलाहट की कहानियां इस बात का महत्व बताने या दर्शाने के लिए रखी गईं थीं कि परमेश्वर ने भविष्यवक्ताओं को अपनी आज्ञा पूरी करने के लिए बुलाया था। और यह महत्वपूर्ण था क्योंकि पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने प्रायः ये बातें कहीं थीं जो बहुत अधिक प्रचलित या स्वीकार करने योग्य नहीं थीं। और हमें यह सदैव स्मरण रखना चाहिए कि इन कहानियों ने इस बात का महत्व बताया कि परमेश्वर ने इन लोगों को उसकी सेवा करने के लिए बुलाया था। जब हम पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं को सुनते हैं, तो हम ऐसी बातें भी सुनेंगे जो हमें अच्छी नहीं लगती या जिन्हें हम स्वीकार करना नहीं चाहते, परन्तु हमें यह याद रखना चाहिए कि भविष्यवक्ता परमेश्वर के द्वारा बुलाए गए थे।

## प्रतीकात्मक कार्य

भविष्यवाणीय पुस्तकों में पाए जाने वाले ऐतिहासिक वर्णन भविष्यवक्ताओं के प्रतीकात्मक कार्यों पर भी ध्यान केन्द्रित करते हैं। बहुत बार परमेश्वर ने अपने वक्ताओं को कुछ खास कार्य करने के लिए बुलाया जिन्होंने उनकी सेवकाई के लिए प्रतीकात्मक कार्य किया। उदाहरण के तौर पर यिर्मयाह अध्याय 13 में यहूदा के भ्रष्टाचार को दर्शाने के लिए भविष्यवक्ता को कहा गया कि वह अपने कमरबंद को जाकर तब तक गाड़ दे जब तक वह सड़ न जाए। अध्याय 19 में यहूदा में होने वाली घटना के प्रतीक के रूप में यिर्मयाह को कहा गया कि वह मिट्टी के एक बर्तन को खरीदे और अगुवों की उपस्थिति में उसे तोड़ दे। और अध्याय 32 में परमेश्वर ने अपने लोगों को यह आश्वासन देने के एक चिन्ह के रूप में यिर्मयाह को भूमि खरीदने और उसके दस्तावेजों को संभाल कर रखने का निर्देश दिया कि एक दिन परमेश्वर अपने लोगों को उनकी भूमि पर लौटा ले आएगा।

यिर्मयाह की पुस्तक में ये उदाहरण उन अनेक प्रतीकात्मक कार्यों के थोड़े से उदाहरण हैं जो भविष्यवाणिय पुस्तक में होते हैं। होशे और यहेजकेल जैसी पुस्तकें ऐसी घटनाओं से भरी पड़ी हैं। पुराने नियम में परमेश्वर के लोग उसे अपनी आँखों से देख सकते थे जो परमेश्वर भविष्यवक्ताओं के शब्दों के माध्यम से कह रहा था। और जब हम इन वर्णनों को पढ़ते हैं, तो हम भी अपनी आँखों से देख सकते हैं जो परमेश्वर भविष्यवक्ताओं के माध्यम से कह रहा था।

## दर्शन के वर्णन

भविष्यवक्ताओं की बुलाहटों और प्रतीकात्मक कार्यों के वर्णनों के अतिरिक्त हम भविष्यवाणिय पुस्तकों में एक तीसरे प्रकार ऐतिहासिक वर्णन को पाते हैं- दर्शन के वर्णन। दर्शन के वर्णन वे अनुच्छेद हैं



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

जहां भविष्यवक्ता परमेश्वर के साथ दर्शनरूपी भेंट का वर्णन करता है। दर्शन के वर्णनों की एक बहुत ही महत्वपूर्ण श्रृंखला आमोस 7:1-9 में पाई जाती है। यह अनुच्छेद वास्तव में तीन दर्शनों का वर्णन है। पहला, 7:1-3 में यहोवा आमोस को टिड्डियों का एक झुण्ड दिखाता है जो उत्तरी इस्राएल को नाश करने वाला था, परन्तु आमोस ने इस दर्शन के प्रति एक प्रत्युत्तर दिया। 7:2 में उसने ये शब्द कहे:

> हे परमेश्वर यहोवा, क्षमा कर! नहीं तो याकूब कैसे स्थिर रह सकेगा? वह कितना निर्बल है! (आमोस 7:2)

आमोस को इस बात की चिंता थी कि परमेश्वर के लोगों में से बचे हुए लोग भी टिड्डियों की ऐसी भयानक बीमारी से बच नहीं पाएंगे। और इसलिए पद 3 में परमेश्वर नरम पड़ा और टिड्डियां न भेजने का निर्णय किया।

लगभग इसी प्रकार आमोस के सातवें अध्याय के पद 4 से 6 में परमेश्वर आमोस को यह दिखाता है कि कैसे वह उत्तरी इस्राएल को नाश करने के लिए आग या सूखा भेजने का आदेश देता है। आमोस 7:5 में आमोस ने पुनः प्रत्युत्तर दिया और प्रभु के सामने रोया :

हे परमेश्वर यहोवा, थम जा! नहीं तो याकूब कैसे स्थिर रह सकेगा? वह कैसा निर्बल है। (आमोस 7:5)

पद 6 में परमेश्वर एक बार फिर नरम पड़ता है।

तब एक तीसरे दर्शन का वर्णन आमोस 7:7-9 में किया गया है। इस बार आमोस ने परमेश्वर को अपने हाथ में साहुल लिए हुए एक दीवार के साथ खड़े हुए देखा। वह यह देखने के लिए दीवार को नाप रहा था कि क्या वह टेढ़ी-मेढ़ी तो नहीं और क्या उसे ध्वस्त करने की आवश्यकता तो नहीं। अब इस साहुल ने उस बात को दर्शाया कि परमेश्वर अपने लोगों में से हर व्यक्ति का न्याय करेगा और केवल उन्हें ही नाश करेगा जिन्होंने उसके विरूद्ध विद्रोह किया था। आमोस के पास इस दर्शन के बारे में कहने के लिए कुछ नहीं था। वह जानता था कि परमेश्वर के लोगों में से धर्मी लोग तो बच ही जाएंगे।

भविष्यवाणिय पुस्तकें इस प्रकार के दर्शनों के वर्णनों से भरी हुई हैं। आप यहेजकेल के पहले अध्याय को तो याद करते होंगे। और आप दानिय्येल के अनेक दर्शनों को भी याद करेंगे। भविष्यवाणिय दर्शन के वर्णन हमें भविष्यवाणिय वचनों के स्वर्गीय उद्गम के बारे में बताते हैं।

## ऐतिहासिक पृष्ठभूमियां

अब भविष्यवाणिय बुलाहटें और प्रतीकात्मक कार्य और दर्शन के वर्णनों के अतिरिक्त भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों में कई ऐतिहासिक वर्णन हमें ऐतिहासिक पृष्ठभूमियां प्रदान करते हैं। इस प्रकार के वर्णन भविष्यवाणिय पुस्तकों में यहां वहां बिखरे हुए पाए जाते हैं। ऐतिहासिक पृष्ठभूमियों पर ध्यान देने का एक महत्वपूर्ण उदाहरण यशायाह 7-8 अध्यायों में पाया जाता है। ये अध्याय उस ऐतिहासिक संदर्भ को प्रदान करते हैं जिनमें यशायाह 7:14 की जानी-मानी भविष्यवाणी पाई जाती है। यशायाह 7:14 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> एक कुमारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानूएल रखेगी। (यशायाह 7:14)

अब अधिकांश मसीही इस पद के आस-पास के वर्णनों पर अधिक ध्यान नहीं देते, अर्थात् यशायाह 7-8 के वर्णन। ये अध्याय यशायाह के भविष्यवाणिय वचनों के लिए ऐतिहासिक संदर्भ प्रदान करते हैं।



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

यशायाह 7:1-2 में हम पाते हैं कि यशायाह इस समय आहाज के पास जा रहा था जब वह सीरिया और उत्तरी इस्राएल से डरा हुआ था। ये राष्ट्र चाहते थे कि राजा आहाज असीरिया के साम्राज्य के विरूद्ध उनके गठबंधन में शामिल हो जाए। इसलिए 7:3-11 का वर्णन हमें बताता है कि यशायाह ने आहाज को एक चेतावनी दी। उसने उसे इन राष्ट्रों से न डरने बल्कि अपने छुटकारे के लिए यहोवा पर भरोसा रखने की भी सलाह दी। परन्तु 7:12 में हम पाते हैं कि आहाज ने परमेश्वर पर भरोसा करने से इनकार कर दिया। इसलिए 7:13-8:18 के ऐतिहासिक वर्णन स्पष्ट करते हैं कि किस प्रकार यशायाह ने आहाज को डांटा और घोषणा की कि परमेश्वर असीरियाई साम्राज्य के द्वारा यहूदा को दण्ड देगा। इस ऐतिहासिक वर्णन की रचना इस अनुच्छेद में यशायाह की भविष्यवाणियों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के रूप में एक संदर्भ को प्रदान करने के लिए की गई थी। हम यशायाह की भविष्यवाणियों को सही रूप में समझने की आशा तभी कर सकते हैं जब हम इस ऐतिहासिक वर्णन के संदर्भ उसकी भविष्यवाणियों को रखते हैं।

जब कभी भी हम पुराने नियम की भविष्यवाणियों को पढ़ते हैं और एक कहानी को पाते हैं, तो हमें स्वयं से ये प्रश्न पूछने चाहिए: क्या हम बुलाहट के वर्णन को पढ़ रहे हैं? क्या हम प्रतीकात्मक कार्य के वर्णन को पढ़ रहे हैं? या क्या हम दर्शन के वर्णन को या केवल एक ऐतिहासिक वर्णन को देख रहे हैं जो हमें भविष्यवाणी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि देता है? जब हम इस प्रकार के प्रश्न पूछते हैं तो हम अपने आपको उन अनुच्छेदों को समझने के योग्य पाएंगे जिन्हें हम पहले समझ नहीं पाते थे।

भविष्यवाणिय साहित्य के हमारे अध्याय में अब तक हम देख चुके हैं कि भविष्यवक्ताओं ने अपनी पुस्तकों में ऐतिहासिक वर्णनों को शामिल किया है। अब हमें उस दूसरी महत्वपूर्ण सामग्री की ओर मुड़ना है जो बाइबल के इस हिस्से में पाई जाती है- परमेश्वर के साथ भविष्यवक्ता की बातचीत।

## परमेश्वर के साथ वार्तालाप

पुराने नियम के भविष्यवक्ता वे स्त्री और पुरुष थे जो परमेश्वर से प्रेम करते थे और इसलिए उनके जीवन प्रार्थना से भरे हुए थे। परन्तु हमें यह भी याद रखना है कि वे अपनी बाइबल से प्रेम करते थे और उन्होंने अपनी बाइबल से प्रार्थना करना सीखा था। और इसलिए हम पाते हैं कि पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने उन रूपों में परमेश्वर से प्रार्थना की जैसे भजनकारों ने की थीं। हर प्रकार की प्रार्थना भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों में पाई जा सकती है।

सरल रूप में बताने के लिए हम प्रार्थनाओं के दो रूपों को दर्शाएंगे जो हम भविष्यवक्ताओं में पाते हैं। पहले हम विलाप की प्रार्थनाओं के बारे में बात करेंगे और फिर स्तुति की प्रार्थनाओं के बारे में। जब भविष्यवक्ता परमेश्वर से बात करते थे तो वे दुःख और आनन्द की विशालता के प्रति अपने हृदयों को खोल देते थे। आइए पहले हम यह देखें कि भविष्यवक्ताओं ने किस प्रकार विलाप की प्रार्थनाओं में स्वयं को अभिव्यक्त किया।

### विलाप की प्रार्थनाएं

दुर्भाग्यवश आज अनेक मसीही उस प्रकार की प्रार्थना से अपरिचित हैं जिसे हम विलाप की प्रार्थना कहते हैं। ये वे प्रार्थनाएं हैं जो प्रभु के समक्ष निराशा, उदासी और असमंजस को रखती हैं। हमारे समय में अनेक मसीही सोचते हैं कि इस प्रकार से प्रार्थना करना अनुचित है, परन्तु हम पाते हैं कि पुराने नियम के भविष्यवक्ता हमें बताते हैं कि उस प्रकार की प्रार्थनाएं प्रभु के साथ हमारे जीवनों का एक महत्वपूर्ण भाग हैं। भविष्यवक्ताओं ने अपने असमंजस, अपनी निराशा और अपनी उदासी को प्रार्थना में

परमेश्वर को सौंप दिया था। विलाप की प्रार्थनाएं सारे भविष्यवक्ताओं में पाई जाती हैं। विशेषकर यिर्मयाह, विलापगीत और हबक्कूक अपने गहन विलाप के कारण जानी पहचानी पुस्तकें हैं, परन्तु इस प्रकार की प्रार्थनाएं भविष्यवाणी की कई पुस्तकों में पाई जाती हैं। बल्कि हाग्गै की पुस्तक ही भविष्यवाणी की एकमात्र पुस्तक है जिसमें ऐसा कोई अनुच्छेद नहीं है जो विलाप की प्रार्थना से संबंधित हो। भविष्यवाणी की पुस्तकों में विलाप की प्रार्थनाओं की अधिकता दर्शाती है कि यह भविष्यवाणीय सेवकाई का बहुत ही महत्वपूर्ण भाग थी।

भविष्यवक्ताओं ने विलाप के द्वारा अपनी बातों को प्रभु के सामने रखा क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के लोगों के इतिहास में सबसे बुरे समयों का सामना किया था। यह देखना कि विलाप किस प्रकार से पुराने नियम की भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों में प्रकट होते हैं, हमें इस बात को महसूस करने में सहायता करता है कि भविष्यवक्ता सामान्यतः दो भिन्न विषयों पर विलाप करता है: पहला, परमेश्वर के लोगों के पाप; और दूसरा, पाप के विरूद्ध परमेश्वर का दण्ड। भविष्यवक्ताओं के विलाप के इन दो विषयों को दर्शाने का एक अच्छा तरीका हबक्कूक की पुस्तक में पाए जाने वाले विलाप को देखना है। हबक्कूक ने यहूदा पर आए बेबीलोनी संकट के दौरान और उससे पहले सेवकाई की थी, और फिर इस कारण हबक्कूक ने दो बड़ी समस्याओं के विषय में परमेश्वर से बात की। एक ओर 1:2-4 में उसने इस्राएल के पापों और परमेश्वर के विरूद्ध इस्राएल के विद्रोह करने के विषय में विलाप किया। और फिर अध्याय 1 में बेबीलोनियों के आक्रमण में परमेश्वर के दण्ड की भयानक परिस्थिति पर विलाप किया। हमें परमेश्वर के लोगों के पापों पर भविष्यवक्ता के विलाप को देखते हुए आरंभ करना चाहिए।

## लोगों के पाप

अपनी पुस्तक के आरंभिक पद में हबक्कूक ने परमेश्वर के लोगों के पापों को दर्शाया और परमेश्वर के सामने रोया। हबक्कूक 1:2 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> हे यहोवा मैं कब तक तेरी दोहाई देता रहूंगा, और तू न सुनेगा? मैं कब तक तेरे सम्मुख "उपद्रव", "उपद्रव" चिल्लाता रहूंगा? क्या तू उद्धार नहीं करेगा? (हबक्कूक 1:2)

हबक्कूक इस बात से बहुत व्याकुल था कि परमेश्वर ने यहूदा की नैतिक दशा के विषय में उसकी प्रार्थनाओं को नहीं सुना था। कई अन्य भविष्यवक्ताओं के समान वह भी राष्ट्र में फैलते जा रहे अन्यायों के कारण चिंतित था। और इसलिए 1:4 में हम पढ़ते हैं:

> इसलिये व्यवस्था ढीली हो गई और न्याय कभी नहीं प्रकट होता। दुष्ट लोग धर्मी को घेर लेते हैं; सो न्याय का खून हो रहा है। (हबक्कूक 1:4)

हबक्कूक इस बात से व्याकुल था कि परमेश्वर ने अपने लोगों के पापों के विरूद्ध दण्ड नहीं दिया। उसने कुण्ठित और असहाय महसूस किया। हबक्कूक की आरंभिक प्रार्थना उस महत्वपूर्ण रूप को दर्शाती है जिसमें भविष्यवक्ताओं ने प्रभु के प्रति अपने हृदयों को व्यक्त किया था। जब उन्होंने परमेश्वर के लोगों के दर्द और कष्ट को देखा तो वे परमेश्वर के समक्ष रोए और दूसरों को भी विलाप करते हुए रोने के लिए बुलाया।

जैसा कि हम देख चुके हैं, हबक्कूक परमेश्वर के समक्ष रोया कि वह यहूदा के लोगों को उनके पापों के लिए दण्ड दे। और जब हम हबक्कूक की पुस्तक को पढ़ते हैं तो हम पाते हैं कि 1:5-11 में परमेश्वर ने यह कहते हुए हबक्कूक की प्रार्थना का प्रत्युत्तर दिया कि वह शीघ्र ही यहूदा के दुष्ट लोगों को दण्ड देगा। जैसा कि हम 1:6 में पढ़ते हैं:



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> देखो, मैं कसदियों (बेबीलोनियों) को उभारने पर हूँ, वे क्रूर और उतावली करनेवाली जाति हैं, जो पराए वासस्थानों के अधिकारी होने के लिये पृथ्वी भर में फैल गए हैं। (हबक्कूक 1:6)

परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि वह यहूदा में अन्याय करने वालों के विरूद्ध दण्ड देने की भविष्यवक्ता की पुकार का उत्तर देगा। अब परमेश्वर हबक्कूक को दिए अपने प्रत्युत्तर में सच्चा था और उसने बेबीलोन के लोगों को वाचायी दण्ड के रूप में भेजा और उन्होंने यहूदा को अपने अधीन कर लिया और परमेश्वर के लोगों के साथ दुर्व्यवहार किया।

### दण्ड

फिर जब परमेश्वर ने दण्ड दे दिया तो हबक्कूक ने फिर से परिस्थिति की ओर देखा एवं एक और मुख्य प्रकार का विलाप दर्शाया जो हम भविष्यवक्ताओं में पाते हैं- अर्थात् परमेश्वर के दण्ड पर विलाप। सुनिए किस प्रकार वह बेबीलोन के लोगों के अधीन यहूदा के दुःखों के विषय में प्रार्थना करता है। हबक्कूक 1:13 में हबक्कूक इन शब्दों को कहता है :

> तेरी आंखें ऐसी शुद्ध हैं कि तू बुराई को देख ही नहीं सकता, और उत्पात को देखकर चुप नहीं रह सकता; फिर तू विश्वासघातियों को क्यों देखता रहता है, और जब दुष्ट निर्दोष को निगल जाता है, तब तू क्यों चुप रहता है? (हबक्कूक 1:13)

भविष्यवक्ता जानता था कि परमेश्वर के लोगों ने भयंकर पाप किए थे, परन्तु अब उसने महसूस किया कि बेबीलोन के पाप तो उनसे भी भयंकर थे। बाहरी अत्याचारियों के अधीन दर्द और कष्टों ने हबक्कूक को एक बड़े विलाप के साथ परमेश्वर के समक्ष गिड़गिड़ाने पर मजबूर कर दिया था। और हबक्कूक की गिड़गिड़ाहट के प्रत्युत्तर में परमेश्वर ने 2:2-20 में भविष्यवक्ता को बताया कि एक दिन वह बेबीलोन के लोगों को उनके अत्याचार के कारण दण्डित करेगा। उदाहरण के तौर पर, 2:8 में हम बेबीलोन के लोगों के प्रति इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> तू ने बहुत सी जातियों को लूट लिया है, सो सब बचे हुए लोग तुझे भी लूट लेंगे। (हबक्कूक 2:8)

परमेश्वर के दण्ड की कठोरता पर हबक्कूक का विलाप स्वर्ग के सिंहासन तक पहुंचा और परमेश्वर ने उसे आश्वासन दिया कि बेबीलोन का विनाश होगा।

भविष्यवक्ताओं की सभी पुस्तकों में हम पाते हैं कि प्रभु के इन सभी सेवकों ने उनके बोझ को लेने के लिए प्रभु के सामने विलाप किया। हम कभी-कभी पाते हैं कि इस्राएल के लोगों को यह आश्वासन देने के लिए कि उनके शत्रु नष्ट किए जाएंगे, वे अन्यजाति के राष्ट्रों के लिए भी विलाप करते हैं। परन्तु सामान्यतः उन्होंने प्रभु के सामने यह बोझ इसलिए रखा कि लोग यह जान लें कि उनके पाप कितने भयंकर थे, और वह उन्हें पश्चाताप करने के लिए बुलाए।

विलाप एक वह तरीका है जिसमें भविष्यवक्ताओं ने परमेश्वर के साथ बातचीत की। अब हमें भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों में पाई जाने वाली प्रार्थना के दूसरे मुख्य प्रकार की ओर मुड़ना चाहिए- परमेश्वर की स्तुति।

## स्तुति की प्रार्थनाएं

जिस प्रकार भजनों में परमेश्वर की स्तुति के अनेक उदाहरण हैं, उसी प्रकार भविष्यवक्ताओं ने भी प्रभु से बात करने के लिए इस प्रकार की अभिव्यक्ति का इस्तेमाल किया। सामान्यतः उन्होंने उसकी



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

महान् वाचायी आशीषों के लिए परमेश्वर की स्तुति की। जब भविष्यवक्ताओं ने देखा कि परमेश्वर क्या करने जा रहा था तो स्तुति करते हुए उसके पास आए। परमेश्वर की स्तुति भविष्यवक्ताओं की अनेक पुस्तकों में पाई जाती हैं। यह भविष्यवक्ताओं में पाया जाने वाला बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है। हम पुस्तक के अंत में प्रकट होने वाली परमेश्वर की स्तुति पर ध्यान देते हुए हबक्कूक की पुस्तक को समाप्त करने जा रहे हैं।

जैसे कि हम पहले ही देख चुके हैं हबक्कूक की अधिकांश पुस्तक में हम मुख्य रूप से भविष्यवक्ता के विलाप और उसके विलाप के प्रति परमेश्वर के प्रत्युत्तर को देखते हैं। परन्तु पुस्तक का अंतिम अध्याय विलाप से स्तुति की ओर मुड़ जाता है। जब परमेश्वर ने यह प्रतिज्ञा कर दी कि परमेश्वर अपने लोगों के साथ दुर्व्यवहार करने के कारण बेबीलोन के लोगों को नाश करेगा। हबक्कूक प्रभु को अद्भुत स्तुति चढ़ाता है। हबक्कूक में हम किस प्रकार की स्तुति पाते हैं? सारे भविष्यवक्ताओं में परमेश्वर की स्तुति में दो विषय महत्वपूर्ण स्थान पाते हैं। जब भविष्यवक्ता स्तुति के साथ प्रभु का सम्मान करते हैं, तो उसके दण्ड और आशीषों के लिए उसकी स्तुति करते हैं। जब हम हबक्कूक की पुस्तक का तीसरा अध्याय देखते हैं, तो हम देखेंगे कि उसने भी इसी शैली को अपनाया है।

## दण्ड

हबक्कूक 3:11-12 में भविष्यवक्ता इन शब्दों को कहता है:

> तेरे उड़नेवाले तीरों के चलने की ज्योति से, और तेरे चमकीले भाले की झलक के प्रकाश से सूर्य और चन्द्रमा अपने अपने स्थान पर ठहर गए। तू क्रोध में आकर पृथ्वी पर चल निकला, तू ने जाति जाति को क्रोध से नाश किया। (हबक्कूक 3:11-12)

हम यहां पर देखते हैं कि भविष्यवक्ता अन्यजाति के राष्ट्रों पर प्रहार करने और उन्हें दण्ड स्वरूप नाश करने की अपनी योग्यता के लिए परमेश्वर का सम्मान करता है।

दण्ड के लिए स्तुति का यह विषय भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों में बहुत जगहों पर प्रकट होता है। उदाहरण के तौर पर भविष्यवक्ता यशायाह 40:20-23 में इस प्रकार स्तुति करता है :

> (परमेश्वर) पृथ्वी के घेरे के ऊपर आकाशमण्डल पर विराजमान है; और पृथ्वी के रहनेवाले टिड्डी के तुल्य है; जो आकाश को मलमल की नाईं फैलाता और ऐसा तान देता है जैसा रहने के लिये तम्बू ताना जाता है; जो बड़े बड़े हाकिमों को तुच्छ कर देता है, और पृथ्वी के अधिकारियों को शून्य के समान कर देता है। (यशायाह 40:22-23)

जब हम ऐसे अनुच्छेदों में आते हैं जहां हम उसके दण्ड के लिए परमेश्वर की स्तुति को पाते हैं तो हम प्रायः बहुत अजीब सा महसूस करते हैं। आज मसीही सोचते हैं कि हमें केवल पृथ्वी पर उसकी आशीषों के लिए प्रभु की स्तुति करनी चाहिए, परन्तु वास्तविकता यह है- संसार परमेश्वर के लोगों को सताता है। और परिणामस्वरूप जब परमेश्वर उन्हें दण्डित करता है जो उसके लोगों को सताते हैं, तो परमेश्वर के लोगों को उसकी स्तुति करनी चाहिए। भविष्यवक्ता यह समझ गए थे और इसलिए उन्होंने उसके दण्ड के लिए प्रभु की स्तुति की।

## आशीषें

दण्ड और आशीष के बीच का संबंध हमें भविष्यवाणिय स्तुति के दूसरे केन्द्र की ओर लेकर आता है। भविष्यवक्ताओं ने प्रायः न केवल उसके दण्ड के लिए प्रभु की स्तुति की बल्कि उन अनेक



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

आशीषों के लिए भी जो वह अपने लोगों को देता है। उदाहरण के तौर पर, भविष्यवक्ता हबक्कूक स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि उसने दण्ड में परमेश्वर की सामर्थ के लिए उसकी स्तुति क्यों की। हबक्कूक 3:12-13 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं:

> तू क्रोध में आकर पृथ्वी पर चल निकला, तू ने जाति जाति को क्रोध से नाश किया। तू अपनी प्रजा के उद्धार के लिये निकला, हाँ, अपने अभिषिक्त के संग होकर उद्धार के लिये निकला। (हबक्कूक 3:12-13)

हबक्कूक ने देखा कि एक दिन परमेश्वर दुष्टों को दण्ड देगा और इस्राएल राष्ट्र को छुड़ाएगा और दाऊद के घराने को पुनर्स्थापित करेगा। हबक्कूक ने इन बातों को देखा और परमेश्वर के दण्ड के लिए उसकी स्तुति की।

लगभग इसी प्रकार भविष्यवक्ता यशायाह भी परमेश्वर के अपने शब्दों को अपने ऊपर लेने के द्वारा परमेश्वर का आदर करता है। यशायाह 44:24 में ये शब्द प्रकट होते हैं :

> यहोवा, तेरा उद्धारकर्ता, जो तुझे गर्भ ही से बनाता आया है, यों कहता है, मैं यहोवा ही सब का बनानेवाला हूँ जिस ने अकेले ही आकाश को ताना और पृथ्वी को अपनी ही शक्ति से फैलाया है। (यशायाह 44:24)

फिर 44:24 और 26 में भविष्यवक्ता यह कहता है:

> यहोवा, तेरा उद्धारकर्ता... यरूशलेम के विषय कहता है, वह फिर बसाई जाएगी और यहूदा के नगरों के विषय, वे फिर बनाए जाएंगे और मैं उनके खण्डहरों को सुधारूंगा (यशायाह 44:24,26)

भविष्यवक्ता ने न केवल उदासी और विलाप की प्रार्थना की, बल्कि परमेश्वर को एक बड़ी, उल्लासपूर्ण स्तुति भी प्रदान की। और जब मूल पाठकों ने इसे पढ़ा तो वे भी परमेश्वर की स्तुति करने को भावविभोर हो गए। जब हम आशीषों और दण्ड के लिए भविष्यवक्ताओं की ओर से प्रभु की स्तुति के शब्दों को सुनते हैं तो हमें भी परमेश्वर की स्तुति में उनके साथ शामिल हो जाना चाहिए।

इस अध्याय में अब तक हमने देखा है कि भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों में ऐतिहासिक वर्णन और परमेश्वर के साथ भविष्यवक्ताओं की वार्तालाप पाई जाती है। हम अब साहित्य की तीसरी श्रेणी की ओर आते हैं जो हम भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों में पाते हैं - लोगों के साथ वार्तालाप।

## लोगों के साथ वार्तालाप

जितना महत्वपूर्ण यह जानना है कि भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों में ऐतिहासिक वर्णन थे, उनमें प्रार्थनाएं थीं, उतना ही यह भी है कि ये शैलियां उस मुख्य उद्देश्य को पूरा नहीं करती जिसके लिए परमेश्वर ने भविष्यवक्ताओं को बुलाया था। परमेश्वर ने भविष्यवक्ताओं को उसके राजदूत होने के लिए, राजाओं और दृष्टिगोचर वाचायी समुदाय के लोगों से बात करने के लिए बुलाया था, और परिणामस्वरूप उनके वचनों के अधिकांश भाग लोगों के लिए परमेश्वर के संदेश थे। और इसलिए हमें भविष्यवाणिय सामग्री के भीतर इस प्रकार की शैली की ओर मुड़ना चाहिए। अब हम लोगों के साथ भविष्यवक्ताओं के वार्तालाप के मुल्यांकन को तीन भागों में बांटेंगे: दण्ड के कथन, आशीष के कथन, और वे कथन जो मिश्रित थे या



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इन दोनो पहलुओं के बीच के थे। आइए पहले हम उन कुछ प्रकारों को देखें जिनमें भविष्यवक्ताओं ने वाचा के लोगों के प्रति दण्ड की घोषणा की थी।

## दण्ड के कथन

हाल ही के दशकों में भविष्यवाणी की पुस्तकों के शोध और अन्य संस्कृतियों के साहित्य के साथ उनकी तुलना ने इसे स्पष्ट कर दिया है कि पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने सामान्यतः लोगों को अपनी बातें विशिष्ट प्रारूपों या तरीकों में कही। कथनों के ये प्रारूप लचीले थे और भिन्न-भिन्न लोगों के द्वारा भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में अपनाए जा सकते थे, परन्तु कथनों के तीन मुख्य प्रकारों का प्रयोग वाचायी दण्ड की घोषणा करने के लिए किया गया था, वे हैं - दण्ड की वचन, हाय के वचन, और मुकदमें। आइए पहले हम दण्ड के वचनों की ओर पहले देखें।

### दण्ड के वचन

दण्ड के वचन सबसे सामान्य प्रकार के कथन हैं जो पुराने नियम की भविष्यवाणी में पाए जाते हैं। दण्ड के एक विशिष्ट वचन में दो मुख्य घटक पाए जाते हैं: पहला, एक दोषारोपण होता है जिसमें भविष्यवक्ता परमेश्वर के लोगों के पापों की ओर ध्यान आकर्षित करता है; दूसरा, दण्डादेश, और इस दण्डादेश में भविष्यवक्ता घोषणा करता है कि अपने पापों के कारण लोग किस प्रकार के वाचायी श्राप का अनुभव करेंगे। कभी-कभी इन दोनों घटकों के क्रम को उलट दिया जाता है, या फिर भविष्यवक्ता इन दोनों में से कोई एक बारी-बारी से घोषित करता है। कुछ अवसरों पर दण्ड की वाणी को संक्षिप्त कर दिया जाता है जिससे इसमें केवल दोषारोपण रहता है या फिर दण्डादेश। परन्तु अधिकांशतः भविष्यवक्ता दोषारोपण और दण्डादेश के द्विरूपीय प्रारूप का ही अनुसरण करते हैं।

उदाहरण के तौर पर आमोस 4:1-3 में आमोस ने सामरिया के विरूद्ध दण्ड के वचन कहे। उसने सामरिया की धनी, पेटू स्त्रियों के विरूद्ध दोषारोपण के साथ आरंभ किया। 4:1 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं:

> हे बाशान की गायो , यह वचन सुनो, तुम जो सामरिया पर्वत पर हो, जो कंगालों पर अन्धेर करतीं, और दरिद्रों को कुचल डालती हो, और अपने अपने पति से कहती हो कि ला, दे हम पीएं! (आमोस 4:1)

हम यहां पर देखते हैं कि आमोस सामरिया की स्त्रियों पर उत्तरी इस्राएल के गरीबों को हानि पहुंचाने का दोष लगाता है। गरीबों की आवश्यकता पूरी करने की अपेक्षा उन्होंने अपनी पेटू जरूरतें पूरी करने के लिए अपने पतियों को बुलाया।

दण्ड के वचनों के अनुरूप ही आमोस 4:2-3 उन लोगों के विरूद्ध परमेश्वर के दण्डादेश की घोषणा की ओर आगे बढ़ता है जिन्होंने अपनी इस वाचायी जिम्मेदारी को तोड़ा है। सुनिए आमोस 4:2-3 क्या कहता है :

> परमेश्वर यहोवा अपनी पवित्रता की शपथ खाकर कहता है, देखो, तुम पर ऐसे दिन आनेवाले हैं, कि तुम कटियाओं से, और तुम्हारी सन्तान मछली की बन्सियों से खींच लिए जाएंगे। और तुम बाड़े के नाकों से होकर सीधी निकल जाओगी और हर्म्मोन में डाली जाओगी, यहोवा की यही वाणी है। (आमोस 4:2-3)

संक्षिप्त में कहें तो आमोस ने भविष्यवाणी की कि सामरिया का नाश होगा और धनी स्त्रियां बंधुआई में भेज दी जाएंगी।



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

## हाय के वचन

दण्ड के वचनों के अतिरिक्त पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने प्रायः एक ऐसे प्रारूप में वाचायी श्रापों की घोषणा की जिसे हाय के वचन कहा जाता है। हाय के वचन दण्ड के वचनों के बहुत ही समान है जिसमें प्रायः दोषारोपण के बाद दण्डादेश आता है। इन दोनों में मुख्य अंतर यह है कि इनकी शुरूआत हाय के साथ होती है।

हाय के वचन का एक उदाहरण यशायाह 5:8-10 में पाया जाता है। वहां भविष्यवक्ता घोषणा करता है कि लोगों ने सारी भूमि खरीदकर गरीब लोगों को उनके अधिकार से वंचित कर दिया था। हाय की अभिव्यक्ति यशायाह 5ः8 में आती है: यशायाह कहता है, "हाय उन पर"। जो यशायाह कहने पर है वह आशीष की बात नहीं, परन्तु परमेश्वर की ओर से श्राप के शब्द हैं। उसके वचनों के दोषारोपण 5:8 की हाय की अभिव्यक्ति का अनुसरण करता है।

> हाय उन पर जो घर से घर, और खेत से खेत यहां तक मिलाते जाते हैं कि कुछ स्थान नहीं बचता, कि तुम देश के बीच अकेले रह जाओ। (यशायाह 5:8)

हमें सदैव यह याद रखना है कि मूसा के दिनों में परमेश्वर ने स्थापित किया था कि हर परिवार के पास स्थाई सम्पत्ति की सुरक्षा होगी। यशायाह के दिनों में धनी यहूदियों ने जितनी सम्पत्ति वे खरीद सकते थे उतनी खरीद कर इस वाचा का उल्लंघन किया। इसलिए यशायाह 5:9-10 में भविष्यवक्ता वाचा का उल्लंघन करने वाले इन लोगों के विरूद्ध दण्डादेश की घोषणा करता है :

> सेनाओं के यहोवा ने मेरे सुनते कहा हैः निश्चय बहुत से घर सुनसान हो जाएंगे, और बड़े बड़े और सुन्दर घर निर्जन हो जाएंगे। क्योंकि दस बीघे की दाख की बारी से एक ही बत दाखमधु मिलेगा, और होमेर भर के बीज से एक ही एपा अन्न उत्पन्न होगा। (यशायाह 5:9-10)

अन्य कई भविष्यवाणियों के समान हम यहां पर देखते हैं कि यह सजा अपराध के अनुरूप है। धनी लोगों ने सम्पत्ति एकत्रित करके अपने आर्थिक लाभ को सुनिश्चित करने का प्रयास किया था, परन्तु परमेश्वर यह सुनिश्चित कर रहा था कि उनके प्रयास व्यर्थ हो जाएं। इस प्रकार के हाय के वचन सारे भविष्यवक्ताओं में पाए जाते थे।

## मुकदमें

दण्ड और हाय के वचनों के अतिरिक्त भविष्यवक्ताओं ने मुकदमों के रूप में वाचायी श्रापों को घोषित किया था। इब्रानी शब्द रिब (רִיב) को अक्सर इस प्रकार के कथनों के साथ जोड़ा जाता है। सामान्यतः रिब का अर्थ होता है "प्रयास करना" या "विवाद करना," परन्तु इसने भविष्यवक्ताओं में एक अलग ही अर्थ को ले लिया था। यह कानूनी प्रयास को दिखाता है। यह कानूनी प्रक्रिया या मुकदमे के लिए एक तकनीकी शब्द है जो महान् राजा यहोवा के स्वर्गीय न्यायालय में होता है।

हम पहले ही देख चुके हैं कि भविष्यवक्ता प्रायः परमेश्वर के सिंहासन कक्ष के स्वर्गीय दर्शन देखते थे। और अनेक बार परमेश्वर के सिंहासन कक्ष को न्यायालय के रूप में देखा जाता था, और परिणामस्वरूप यह शब्द निकलकर आता है। परमेश्वर को अभियोक्ता और न्यायी दोनों के रूप में देखा जाता है। परमेश्वर के लोगों के खिलाफ गवाहों को बुलाया जाता है और परमेश्वर के लोग प्रतिवादी होते हैं जिन पर परमेश्वर के द्वारा दोष लगाया जाता है। अब सामान्यतः हम भविष्यवक्ताओं में पूरे विकसित मुकदमें नहीं पाते हैं, परन्तु बहुत बार हमें संशोधित मुकदमें मिलते हैं। रिब या मुकदमें में कई तत्व पाए जा सकते हैं। पहला, जिस प्रकार हम न्यायालय के दृश्य में अपेक्षा करते हैं, न्यायालय में बुलावा होता है। गवाहों को पहचाना जाता है। तब परमेश्वर समीक्षा करता है कि वह आरोपियों के प्रति कितना दयालु रहा



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

है, और प्रायः किसी न किसी प्रकार का प्रत्युत्तर दिया जाता है, और कभी-कभी स्वयं भविष्यवक्ता द्वारा। और तब दण्डादेश के साथ परमेश्वर का दोषारोपण आता है।

पूरे मुकदमें का एक सर्वोत्तम उदाहरण मीका 6:1-16 में प्रकट होता है। पद 1 में हम न्यायालय में बुलावे को सुनते हैं। सुनिए प्रभु क्या कहता है:

> जो बात यहोवा कहता है, उसे सुनोः उठकर, पहाड़ों के साम्हने वादविवाद कर, और टीले भी तेरी सुनने पाएं। (मीका 6:1)

तब पद 2 में स्वयं गवाहों को संबोधित किया जाता है:

> हे पहाड़ों, और हे पृथ्वी की अटल नेव, यहोवा का वादविवाद सुनो। (मीका 6:2)

गवाहों के इस संबोधन के बाद, परमेश्वर अपने लोगों को अपनी दया के न्यायालय के बारे में याद दिलाता है। पद 3 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं:

> हे मेरी प्रजा, मैं ने तेरा क्या किया, और क्या करके मैं ने तुझे उकता दिया है? (मीका 6:3)

तब भविष्यवक्ता मीका पद 6-8 में परमेश्वर के प्रश्न का नम्रता में प्रत्युत्तर देते हुए लोगों के लिए बोलता है। वह पद 6 में कहता है:

> मैं क्या लेकर यहोवा के सम्मुख आऊं, और ऊपर रहनेवाले परमेश्वर के साम्हने झुकूं? (मीका 6:6)

तब राष्ट्र के दोष को स्वीकार करते हुए, मीका पद 8 में यह निष्कर्ष निकालता है:

> हे मनुष्य, वह तुझे बता चुका है कि अच्छा क्या है; और यहोवा तुझ से इसे छोड़ और क्या चाहता है? कि तू न्याय से काम करे, और कृपा से प्रीति रखे, और अपने परमेश्वर के साथ नम्रता से चले। (मीका 6:8)

भविष्यवक्ता के प्रत्युत्तर को देखते हुए हम पद 10-12 में दोषारोपणों को और पद 13-16 में दण्डादेशों को पाते हैं। इस अनुच्छेद के समान भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों में मुकदमें परमेश्वर द्वारा उन्हें दोषी ठहराने और अपने लोगों को दण्ड की चेतावनी देने के तरीके के रूप में प्रकट होते हैं।

## आशीष के कथन

जैसे कि हम देख चुके हैं भविष्यवक्ता परमेश्वर के लोगों के विरूद्ध उसके दण्ड की ही घोषणा नहीं करते। वे यह घोषणा भी करते हैं कि परमेश्वर अपने लोगों को आशीषें भी देगा। मूलतः दो ऐसे तरीके हैं जिनमें भविष्यवक्ता अपने लोगों के लिए दैव्य आशीषों की घोषणा करते हैं: एक ओर भविष्यवक्ता परमेश्वर के लोगों के शत्रुओं के विरूद्ध दण्ड की घोषणा करते थे। और दूसरी ओर वे परमेश्वर के लोगों के लिए प्रत्यक्ष रूप से आशीषों की घोषणा करते थे। आइए पहले देखें कि शत्रुओं पर दण्ड किस प्रकार परमेश्वर के लोगों के लिए आशीष बनता है।

### शत्रुओं पर दण्ड

इस्राएल के पूरे इतिहास में विदेशी राष्ट्रों ने परमेश्वर के लोगों को परेशान किया, और परमेश्वर द्वारा अपने लोगों के लिए बड़े उपहारों और आशीषों की घोषणा करने का एक तरीका अपने भविष्यवक्ताओं से

इन शत्रुओं पर दण्ड की भविष्यवाणी करवाना था। फलस्वरूप हम भविष्यवक्ताओं की सभी पुस्तकों में अन्यजाति के शत्रुओं के लिए दण्ड के वचनों, हाय के वचनों और मुकदमों को पाते हैं। उदाहरण के तौर पर नहूम 3:1 में हम निनवे के विषय में ये शब्द पढ़ते हैं:

> हाय उस हत्यारी नगरी पर, वह तो छल और लूट के धन से भरी हुई है; लूट कम नहीं होती है। (नहूम 3:1)

अन्यजाति के शत्रुओं के विरूद्ध दण्ड और हाय के वचनों एवं मुकदमों के द्विपक्षीय उद्देश्य थे। उन्होंने घोषणा की थी कि परमेश्वर उन्हें इस्राएल के शत्रुओं के हाथ सौंप देगा, परन्तु उनमें आश्वासन देने का सकारात्मक उद्देश्य भी था कि परमेश्वर अपने लोगों को छुड़ाएगा भी।

## आशीष के वचन

शत्रुओं पर दण्ड की घोषणा के अतिरिक्त भविष्यवक्ताओं ने आशीष के वचनों की घोषणा के द्वारा इस्राएल के लिए आशा के शब्द भी कहे। आशीषों की घोषणाएं अपनी रचना में बहुत ही लचीली थीं और वे भिन्न-भिन्न प्रकार की थीं, परन्तु फिर भी मूलभूत प्रारूप सदैव प्रकट होता है। पहला, परिचयात्मक संबोधन प्रकट होता है, और फिर आने वाली आशीष का कोई कारण दिया जाता है। फिर घोषणाएं स्पष्ट करती हैं कि वह आशीष क्या होगी। उदाहरण के तौर पर, भविष्यवक्ता यिर्मयाह ने 35:18-19 में रेकाबियों के लिए आशीष की घोषणा की। पद 18 के पहले भाग में हम इन वचनों के परिचय को पाते हैं :

> इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा तुम से यों कहता है... (यिर्मयाह 35:18)

इस परिचयात्मक सिद्धान्त के बाद वह कारण आता है जिसके लिए परमेश्वर अपने लोगों को आशीष देने जा रहा है। पद 18 के दूसरे भाग में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं:

> तुम ने जो अपने पुरखा योनादाब की आज्ञा मानी, वरन उसकी सब आज्ञाओं को मान लिया और जो कुछ उस ने कहा उसके अनुसार काम किया है (यिर्मयाह 35:18)

तब पद 19 में आशीष की घोषणा आती है:

> रेकाब के पुत्र योनादाब के वंश में सदा ऐसा जन पाया जाएगा जो मेरे सम्मुख खड़ा रहे। (यिर्मयाह 35:19)

आशीष का एक और जाना-पहचाना वचन यिर्मयाह 31:31-34 में प्रकट होता है। पहले परमेश्वर पद 31-33 में आशीष की घोषणा करता है। यिर्मयाह 31:31 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं:

> फिर यहोवा की यह भी वाणी है, सुन, ऐसे दिन आनेवाले हैं जब मैं इस्राएल और यहूदा के घरानों से नई वाचा बान्धूंगा। (यिर्मयाह 31:31)

भविष्यवक्ता ने एक नई वाचा की आशीष की घोषणा की जो इस्राएल के बंधुआई से लौट आने के बाद आएगी। तब यिर्मयाह 31:34 में हम इस आशीष के कारण को पाते हैं:

> मैं उनका अधर्म क्षमा करूंगा, और उनका पाप फिर स्मरण न करूंगा। (यिर्मयाह 31:34)

क्षमा में परमेश्वर के अनुग्रह ने नई वाचा की प्रतिज्ञा के आधार की रचना की।



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

## मिश्रित कथन

यहां तक हम देख चुके हैं कि भविष्यवक्ताओं ने विशिष्ट तरीके के कथन कहे जिन्होंने परमेश्वर की आशीषों और परमेश्वर के श्रापों दोनों के बारे में बात की। परन्तु बहुत बार भविष्यवक्ताओं में हमें मिश्रित कथन भी मिलते हैं। अब ये मिश्रित कथन कई विभिन्न रूपों में आते हैं और हम उनमें से कुछ पर ही ध्यान दे पाएंगे। परन्तु हमें यह याद रखना होगा कि इन मिश्रित कथनों में परमेश्वर की आशीषों और परमेश्वर के श्रापों दोनों का उल्लेख करने की क्षमता होती है।

### दण्ड-उद्धार के वचन

पहले हम दण्ड-उद्धार के वचनों के बारे में बात करते हैं जहां एक ही कथन में कुछ को दण्ड की चेतावनी दी जाती है और कुछ को आशीषें प्रदान की जाती हैं। यशायाह 57:14-21 मिश्रित कथन का एक अच्छा उदाहरण है जिसमें दुष्टों के लिए दण्ड के शब्द और धर्मियों के लिए उद्धार के वचन पाए जाते हैं।

### पश्चाताप की बुलाहट

इसके अतिरिक्त बहुत बार भविष्यवक्ता लोगों को दण्ड की चेतावनी देते हुए और पश्चाताप करने वालों को आशीष की प्रतिज्ञा करते हुए पश्चाताप करने की बुलाहट देते हैं। पश्चाताप की बुलाहट का एक उदाहरण यशायाह 55:6-13 में पाया जा सकता है। वहां भविष्यवक्ता परमेश्वर के लोगों को उनके बुरे मार्गों से हटने की बुलाहट देता है।

### युद्ध की बुलाहट

कई बार भविष्यवक्ता अपने श्रोताओं को युद्ध के लिए बुलाते हैं। पुनः ये बुलाहटें मिश्रित हैं क्योंकि वे विजय या फिर पराजय की बुलाहटें हो सकती हैं। उदाहरण के तौर पर होशे 5:8-11 में हम परमेश्वर के दण्ड का सामना करने के लिए तैयार रहने हेतु युद्ध की बुलाहट को पाते हैं।

### भविष्यवाणिय विवाद

मिश्रित कथनों का एक और उदाहरण भविष्यवाणिय विवाद है। भविष्यवक्ता दूसरे भविष्यवक्ताओं के साथ विवाद में पड़ जाते थे। उदाहरण के तौर पर मीका 2:6-11 में भविष्यवक्ता ने झूठे भविष्यवक्ताओं के दृष्टिकोणों के विरूद्ध वाद-विवाद किया। विवाद आने वाली आशीषों या श्रापों की घोषणा करते हैं।

### दृष्टांत

अंत में भविष्यवक्ताओं ने दृष्टांतों की शैली में मिश्रित संदेशों की घोषणा की। दृष्टांत परमेश्वर के अनुग्रह की सकारात्मक घोषणा या उसके दण्ड की नकारात्मक घोषणा हो सकते हैं। यशायाह 5ः1-7 भविष्यवक्ताओं में दृष्टांत का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। वहां भविष्यवक्ता यशायाह ने इस्राएल की तुलना एक दाख की बारी से की।

कई प्रकार के मिश्रित वचन हैं जिन्हें हम सभी भविष्यवक्ताओं में पाते हैं, परन्तु फिर भी जब हम उन्हें देखते हैं तो हमें इस बात के प्रति सचेत रहना चाहिए कि ये कथन या तो वाचायी आशीषों या फिर श्रापों की घोषणा करने के कार्य कर सकते हैं।



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

# उपसंहार

हम देख चुके हैं कि भविष्यवाणिय साहित्य में भविष्यवक्ताओं द्वारा लिखे कई प्रकार के कथन पाए जाते हैं। ऐतिहासिक वर्णनों और परमेश्वर से बातचीत के अतिरिक्त भविष्यवक्ताओं ने लोगों के पास परमेश्वर के वचन को पहुंचाने में काफी समय बिताया। यह कल्पना करना कठिन है कि हम भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों में पाई जाने वाली विभिन्न शैलियों को पहचानने को नजरअंदाज कर दें। कई बार हम भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों को पढ़ते हुए खो जाने या असमंजस में पड़ जाने का अनुभव करते हैं क्योंकि हम उन विभिन्न प्रकार की समग्रियों से परिचित नहीं हैं जो हमें वहां मिलती हैं। हम देख चुके हैं कि हमें भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों में ऐतिहासिक वर्णन और परमेश्वर एंव लोगों के साथ वार्तालाप मिलते हैं। जब हम भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों को पढ़ते हैं और इन शैलियों को विभिन्न प्रकारों को मन में रखते हैं, तो हम यह बहुत अच्छी रीति से समझ पाएंगे कि अपने समय में उनके वचनों का क्या अर्थ था और आज हमारे लिए उनका क्या अर्थ है।



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।